21वीं सदी के प्रारंभ में सांस्कृतिक साम्राज्यवाद–2

हमारी समझ में सांस्कृतिक साम्राज्यवाद कोई अलग परिघटना नहीं, साम्राज्यवाद का ही सांस्कृतिक मोर्चा है। जेम्स पैट्रास भी शायद यही सोचते हों और इस परिघटना पर आवश्यक बल देने के लिए इसे अलग से नाम दे दिया हो। (यह विवाद भी महत्त्वपूर्ण है पर इस पर कभी अलग से) इस लेख में सांस्कृतिक जगत में बढ़ते साम्राज्यवादी हमले की सूक्षमता, व्यापकता और प्रभाव का समुचित विश्लेषण है। हमें विश्वास है कि पाठक इससे उद्वेलित होंगे। प्रतिक्रियाएं आमंत्रित हैं।

“नव उदारतावाद के लगातार फलने-फूलने का कारण यह नहीं है कि यह समस्याओं का समाधान करता है, बल्कि इसलिए कि यह धनाढ्यों और शक्तिशाली तबकों के हितों की रक्षा करता है और तीसरी दुनिया की सड़कों पर मारे-मारे फिरने वाले कंगाल निजी कारोबार चलाने वालों के थोड़े से हिस्से में स्पंदन पैदा करता है। तीसरी दुनिया की संस्कृतिक का उत्तरी अमेरिकीकरण राष्ट्रीय शासक वर्गों के आशीर्वाद और सहयोग से किया जाता है, क्योंकि यह उनके शासन को स्थिर बनाने में मदद पहुंचाता है। नए सांस्कृतिक प्रतिमान, जैसे-निजी सार्वजनिक से ऊपर है, बल्कि समाज से ऊपर है, सनसनीखेज और हिंसक होना रोजमर्रा के संघर्षों और सामाजिक यथार्थों से ऊपर है। ये सब आत्मकेन्द्रित मूल्यों को सूक्ष्मतापूर्वक लोगों के मन में बैठाने और सामूहिक कार्यकलाप को क्षतिग्रस्त करने में सहायक होते हैं। छबियों, क्षणिक अनुभवों और यौवन-उन्माद की संस्कृतिक विचार-विमर्श, प्रतिबद्धता तथा स्नेह और एकजुटता की साझी अनुभूति के विरुद्ध कार्य करता है। संस्कृति के उत्तरी अमेरिकीकरण का अर्थ है प्रसिद्धियों, व्यक्तित्वों और निजी गपबाजी पर लोगों का ध्यान केन्द्रित करना, न कि सामाजिक गहराइयों, आर्थिक मुद्दों और इंसान के हालात पर। सांस्कृतिक साम्राज्यवाद राजनीतिक शक्ति-संबंध की ओर से ध्यान हटाता है और सामाजिक सक्रियता के सामूहिक रूपों को क्षरित करता है।”

सांस्कृतिक उपनिवेशवाद की वर्तमान चुनौती की खास बातें हैं–गरीबों के बीच जनसंचार माध्यमों का बढ़ता घुसपैठ, सांस्कृतिक मालों की बिक्री के क्षेत्र में अमेरिकी बड़ी कम्पनियों का बढ़ता निवेश एवं मुनाफा और दर्शकों/श्रोताओं को ऐसे कार्यक्रमों से सराबोर कर देना, जिनमें वैयक्तिक भोग–विलास और अपूर्व आनन्द की दूसरों द्वारा किए गए अनुभवों को गरीब जनता के आगे परोसा जाता है।

अमेरिकी मीडिया संदेश तीसरी दुनिया की जनता को दो प्रकार की चेतना को कुंद करने के लिए वे ‘‘अंतरराष्ट्रीयता’’ और ‘‘वर्गेतर’’ के संबंधों का विभ्रम खड़ा करते हैं। दूरदर्शन की छवियों के जरिए मीडिया के खाए–अघाए चरित्रों और झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले कंगाल दर्शकों के बीच एक झूठी आत्मीयता और काल्पनिक संबंध स्थापित किया जाता है। इन्हीं संबंधों के माध्यम से निजी समस्याओं के व्यक्तिगत समाधान का प्रवचन प्रसारित किया जाता है। संदेश स्पष्ट है। लोग गरीबी के लिए खुद जिम्मेदार हैं, क्योंकि सफलता तो व्यक्तिगत प्रयासों पर निर्भर करती है। लातिन अमेरिका के अधिकांश टी.वी. उपग्रह तथा अमेरिकी और यूरोपिय जनसंचार माध्यामों के जाल इस नए सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के राजनीतिक–आर्थिक कारणों और परिणामों की आलोचना नहीं करते, जिसमें लाखों कंगाल लातिन अमेरिकियों को अस्थाई तौर पर दिग्भ्रमित और गतिहीन बना दिया है।

भाषा की राजनीति

सांस्कृतिक साम्राजयवाद ने वामपंथ का प्रतिकार करने और अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए दोहरी रणनीति विकसित की है। एक तरफ वह वामपंथ की राजनीतिक भाषा को भ्रष्ट करना चाहता है और दूसरी ओर आम जनता को पश्चिमी शक्तियों द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों के प्रति असंवेदनशील बनाने का काम करता है। 1980 के दशक के दौरान पश्चिमी जनसंचार माध्यमों ने वामपंथ के बुनियादी विचारों को एक–एक कर चुराया, उनमें से उसकी अन्तर्वस्तु को निकाला और उन्हें प्रतिक्रियावादी संदेशों से भर दिया। उदाहरण के लिए, जनसंचार माध्यमों ने पूंजीवाद की पुनर्स्थापना करने तथा गैर बराबरी को प्रोत्साहित करने वाले राजनीतिज्ञों का बखान ‘‘सुधारक’’ और ‘‘क्रांतिकारी’’ के रूप में किया, जबकि उनके विरोधियों के ऊपर ‘‘रूढ़िवादी’’ का लेबल लगा दिया। सांस्कृतिक साम्राज्यवाद राजनीतिक भाषा का अर्थ उलट कर वैचारिक भ्रांति और राजनीतिक दिशाहीनता को बढ़ावा देना चाहता है। कई प्रगतिशील व्यक्ति इस वैचारिक छल–छद्मा के चलते दिग्भ्रमित हो गए। परिणामस्वरूप वे साम्राज्यवादी विचारकों के इन दावों के आगे किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गए जो कहते थे कि ‘‘दक्षिण’’ और ‘‘वाम’’ शब्द अब कोई मायने नहीं रखते कि इनके बीच की भिन्नताओं का अब कोई अर्थ नहीं रहा। सांस्कृतिक साम्राज्यवादी, वामपंथ की भाषा को भ्रष्ट करके तथा वामपंथ और दक्षिणपंथ की अन्तर्वस्तु को विकृत करके साम्राज्यवाद विरोधी आन्दोलनों की राजनीतिक अपीलों और राजनीतिक कार्यवाइयों को कमजोर करने की उम्मीद करते हैं।

सांस्कृतिक साम्राज्यवाद की दूसरी रणनीति है जनता को असंवेदनशील बनाना, ताकि पश्चिमी राजसत्ताओं द्वारा की जानेवाली सामूहिक हत्याओं को रोजमर्रे की स्वीकार्य क्रिया कलाप मान लिया जाए। ईराक में की गई बमबारी को वीडियो गेम्स के रूप में प्रस्तुत किया गया। मानवता के विरुद्ध किए गए अपराधों को नगण्य साबित करके जनता को इस परम्परागत विश्वास के प्रति असंवेदनशील बनाया जाता है कि मानवता को पीड़ित करना अन्याय है।

युद्ध कौशल के नए तकनीकों की आधुनिकता पर बल देकर जनसंचार माध्यम मौजूदा अभिजात्य शक्ति पश्चिम के तकनीकी युद्ध कौशल को महिमा मंडित करता है। सांस्कृतिक साम्राज्यवाद आजकल ऐसे ‘‘समाचार’’ रिपोर्टों को प्रसारित करता है जिनमें व्यापक विध्वंस के हथियारों को तो मानवोचित गुणों के साथ प्रस्तुत किया जाता है, जबकि तीसरी दुनिया में जो लोग उनके शिकार होते हैं, उन्हें श्रीहीन ‘‘हमलावर’’ ‘‘आतंकवादी’’ के रूप में।

वैश्विक पैमाने का यह सांस्कृतिक छल–प्रपंच राजनीति की भाषा को विकृत करके कायम रखा जाता है। पूर्वी यूरोप में, जमीन उद्योग और सम्पत्ति हड़पने वाले सट्टेबाजों और माफियाओं को ‘‘सुधारक’’ कहा जाता है तस्कर–व्यापारियों का ‘‘पथ–प्रवर्तक उद्यमी’’ के रूप में बखान किया जाता है। पश्चिमी देशों के प्रबंधकों के हाथों में मजदूरों की भर्ती और छंटनी का निरंकुश अधिकार केन्द्रित करने तथा श्रमिकों की बढ़ती असुरक्षा को ‘‘श्रमिक नमनशीलता’’ कहा जाता है। तीसरी दुनिया के राष्ट्रीय सार्वजनिक उद्योगों को महाकाय बहुराष्ट्रीय एकाधिकारियों के हाथ बेंचे जाने की व्याख्या ‘‘पुनर्परिवर्तन’’ वस्तुत: श्रमिकों का 19वीं सदी वाली अवस्था में प्रत्यावर्तन का मंगलाचरण है, जब उन्हें सभी तरह के सामाजिक लाभों से वंचित रखा गया था। अर्थव्यवस्था को फिर से कच्चे माल के निर्यात तक सीमित कर देना या उत्पादन की जगह सट्टेबाजी को आय का साधन बना देना ही अर्थव्यवस्था का ‘‘पुनर्गठन’’ है। ‘‘नियंत्रण हटाने’’ का अर्थ व्यवस्था को नियंत्रित करने वाली शक्ति को राष्ट्रीय कल्याणकारी राज्य की जगह अन्तरराष्ट्रीय बैंकों और बहुराष्ट्रीय शक्ति–संभ्रांतों को सौंप देना है। लातिन अमेरिका में ‘‘ढांचागत समायोजन’’ का अर्थ है–संसाधनों को निवेशकों के हाथों में सौंप देना और मजदूरों की मजदूरी कम कर देना। वामपंथ की अवधारणाएं (सुधार, भूमि–सुधार, ढांचागत परिवर्तन) मूलत: आय के पुनर्बटवारे की ओर निर्दिष्ट थीं। अब इन्हीं अवधारणाओं को अपनाकर, इन्हें पश्चिम अभिजात्यों के हाथों में सम्पत्ति, आय और शक्ति को फिर से संकेन्द्रित करने का प्रतीक बनाया जा रहा है। और, वास्तव में यह साम्राज्यवाद की सभी निजी सांस्कृतिक संस्थाएं कर रही हैं। वर्तमान सांस्कृतिक साम्राज्यवाद ने मुक्ति की भाषा को दूषित कर दिया है, इसे प्रतिक्रियावाद के प्रतीकों में तब्दील कर दिया है।

सांस्कृतिक आतंकवाद

पश्चिम राज्य आतंकवाद सामाजिक आन्दोलनों और क्रांतिकारी सरकारों को ध्वस्त करने एवं वैधानिक समाज को अव्यवस्थित करने का प्रयास करता है। (उदाहरण के लिए 1980 के दशक में अलसल्वाडोर और ग्वाटेमाला की घटनाएं, निकारागुआ की सान्देनिस्ता सरकार और चिली में अलेन्दे की सरकार का तख्ता–पलट तथा 1970–80 के दौरान उरूग्वे और अर्जेन्टीना के तानाशाहों की कारगुजारियां) तथा मुद्राकोष या निजी बैंकों के समूह द्वारा प्रयुक्त आर्थिक आतंकवाद देशी उद्योगों को नष्ट करता है, सार्वजनिक मालिकाने को क्षरित करता है और मजदूरी या वेतन पर जीने वाले परिवारों की गर्दन पर तलवार चलाता है, जबकि सांस्कृतिक साम्राज्यवाद देशी सांस्कृतिक क्रिया–कलापों और कलाकारों के भौतिक विस्थापन के लिए जिम्मेदार है। सांस्कृतिक साम्राज्यवाद तीसरी दुनिया की संवेदनशील जनता की मनोवैज्ञानिक कमजोरियों और गहरी चिंताओं को अपना निशाना बनाता है। खासतौर पर ‘‘पिछड़ा’’, ‘‘परम्परावादी’’ और उत्पीड़न होने की भावना का लाभ उठाकर वह उनमें ‘‘गतिशीलता’’ और ‘‘स्वतंत्र अभिव्यक्ति’’ की नई धारणाएं फैलाता है, परिवार और समुदाय के पुराने बंधनों को छिन्न–भिन्न करता है, जबकि बहुराष्ट्रीय शक्तियों और वाणिज्यिक बाजारों से जुड़ा स्वेच्छाचारी सत्ता की नई जंजीरों में जकड़ता जाता है। परम्परागत आत्मसंयमों और दायित्वों पर प्रहार ही वह प्रक्रिया है, जिसके जरिए पूंजीवादी बाजार और राज्य अनन्य सत्ता के चरम केन्द्र बन जाते हैं।

‘‘आधुनिकता’’ की नकली भावनाओं के जरिए तीसरी दुनिया की ‘‘रूढ़िवादी’’ कहलाने से डरने वाली जनता को बहकाकर और छलकर, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद ‘‘आत्म–अभिव्यक्ति’’ के बहाने उन पर निरंकुश शासन करता है। सांस्कृतिक साम्राज्यवाद उन सभी पूर्ववर्ती संबंधों का विरोध करता है, जो आधुनिक युग के एक मात्र परम–पावन देवता–बाजार के मार्ग में विघ्न डालते हों। तीसरी दुनिया की जनता को ‘‘आधुनिक’’ होने के लिए पूंजीवादी बाजार की मांगों के आगे आत्म–समर्पण करने के लिए, अपने आरामदेह, परम्परागत, ढीले–ढाले पहनावे को त्यागकर अनुपयुक्त और असंगत टाइट ब्लू जीन्स पहनने के लिए तरह–तरह से रिझाया, धमकाया और सहलाया जाता है।

सांस्कृतिक साम्राज्यवाद गुलाम मानसिकता वाले बिचौलियों, सांस्कृतिक शत्रु सहयोगियों के जरिए सबसे बढ़िया ढंग से काम करता है। तीसरी दुनिया के नव धनाढ्य व्यवसायी साम्राज्यवादी के आदर्श सहयोगी होते हैं, जो अपने आकाओं के रंग–ढंग की नकल करते हैं। ये शत्रु सहयोगी पश्चिम के चाटुकार, जनता के प्रति दम्भी और स्वेच्छाकारी व्यक्तित्व के नमूना होते हैं। बैंकों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के समर्थन से वे राजसत्ता और देशी प्रचार माध्यम के जरिए असीम शक्ति को नियंत्रित करते हैं। पश्चिम के ये नक्काल मुक्त व्यापार के नाम पर अपने देश और जनता का क्रूर शोषण करने के लिए दरवाजा खोल देने तथा असमान प्रतियोगिता के नियमों का पालन करने के मामले में दृढ़ होते हैं। शत्रु सहयोगियों की अगली कतार में वे संस्थागत बुद्धिजीवी होते हैं, जो वस्तुनिष्ठ सामाजिक विज्ञान की विशिष्ट शब्दावली के आवरण में वर्गीय शासन और साम्राज्यवादी वर्ग युद्ध को छुपाते हैं।

वे बाजार की अच्छाई–बुराई के अंतिम निर्णायक के रूप में पूजनीय वस्तु बना देते हैं। ‘‘क्षेत्रीय सहकार’’ के शब्द–जाल के जरिए साम्राज्यवाद के समर्थक बुद्धिजीवी पूंजी की गति को बाधित करने वाले संगठनों और मजदूर वर्ग पर प्रहार करते हैं–उनके समर्थकों को अलगाव में डालते हैं और उन्हें हाशिए पर छोड़ देते हैं।

आज संपूर्ण तीसरी दुनिया के पश्चिमी पैसों पर पलने वाले बुद्धिजीवियों ने ‘‘सामंजस्य’’ (वर्ग–शत्रु–सहयोग) की विचारधारा को अंगीकार कर लिया है। परस्पर–निर्भरता की धारणा ने साम्राज्यवाद की जगह ले ली है और अनियंत्रित विश्व बाजार को विकास के एकमात्र विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। विडम्बना तो यह है कि ‘‘बाजार’’ तीसरी दुनिया के लिए आज जितना कम अनुकूल है, उतना शायद ही पहले कभी रहा हो। तीसरी दुनिया के शोषण के मामले में अमेरिका, यूरोप और जापान इतने आक्रामक कभी नहीं रहे। वैश्विक यथार्थों से संस्थागत बुद्धिजीवियों का यह सांस्कृतिक अलगाव पश्चिम सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के आधिपत्य का बाई–प्रोडक्ट है। विवेकशील बुद्धिजीवी, जो बाजार के इस महोत्सव में शरीक होने से इन्कार करते हैं, जो सरकारी सम्मेलनों की परिधि से बाहर हैं, उनके आगे यह चुनौती है कि वे एक बार फिर वर्ग–संघर्ष और साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष की ओर वापिस आएं।

हमारे युग का एक सबसे बड़ा छलावा है–विचारों, बाजारों और प्रवृतियों के ‘‘अंतरराष्ट्रीयकरण’’ की धारणा। आजकल एकजुटता के किसी एक या सभी रूपों, समुदाय और सामाजिक मूल्यों पर प्रहार को उचित ठहराने के लिए ‘‘वैश्विकरण’’ या ‘‘अन्तरराष्ट्रीयकरण’’ के ढोंग रच कर यूरोप और अमेरिका ऐसे सांस्कृतिक रूपों के प्रमुख निर्यातक बन बैड़े हैं, जो जनसामान्य को अराजनीतिक बनाने और उनके अस्तित्व को तुच्छ साबित करने में अत्यंत सहायक होते हैं। व्यक्तिगत परिवर्तनशीलता व स्वनिर्मित व्यक्तियों की छवियों तथा आत्मकेन्द्रित जिन्दगी पर जोर (जिसे अमेरिकी मीडिया–उद्योग भारी मात्रा में उत्पादित और वितरित कर रहा है) तीसरी दुनिया पर वर्चस्व स्थापित करने के महत्वपूर्ण साधन हो गए हैं।

नव उदारतावाद के लगातार फलने–फूलने का कारण यह नहीं है कि यह समस्याओं का समाधान करता है, बल्कि इसलिए कि यह धनाढ्यों और शक्तिशाली तबकों के हितों की रक्षा करता है और तीसरी दुनिया की सड़कों पर मारे–मारे फिरने वाले कंगाल निजी कारोबार चलाने वालों के थोड़े से हिस्से में स्पंदन पैदा करता है। तीसरी दुनिया की संस्कृतिक का उत्तरी अमेरिकीकरण राष्ट्रीय शासक वर्गों के आशीर्वाद और सहयोग से किया जाता है, क्योंकि यह उनके शासन को स्थिर बनाने में मदद पहुंचाता है। नए सांस्कृतिक प्रतिमान, जैसे–निजी सार्वजनिक से ऊपर है, बल्कि समाज से ऊपर है, सनसनीखेज और हिंसक होना रोजमर्रा के संघर्षों और सामाजिक यथार्थों से ऊपर है। ये सब आत्मकेन्द्रित मूल्यों को सूक्ष्मतापूर्वक लोगों के मन में बैठाने और सामूहिक कार्यकलाप को क्षतिग्रस्त करने में सहायक होते हैं। छबियों, क्षणिक अनुभवों और यौवन–उन्माद की संस्कृतिक विचार–विमर्श, प्रतिबद्धता तथा स्नेह और एकजुटता की साझी अनुभूति के विरुद्ध कार्य करता है। संस्कृति के उत्तरी अमेरिकीकरण का अर्थ है प्रसिद्धियों, व्यक्तित्वों और निजी गपबाजी पर लोगों का ध्यान केन्द्रित करना, न कि सामाजिक गहराइयों, आर्थिक मुद्दों और इंसान के हालात पर। सांस्कृतिक साम्राज्यवाद राजनीतिक शक्ति–संबंध की ओर से ध्यान हटाता है और सामाजिक सक्रियता के सामूहिक रूपों को क्षरित करता है।

☐ क्रमश :